राज्य परिशिष्ट 5

(यीशु मसीह के दृष्टान्त)
1. बाजार में बैठे हुए बालकों का दृष्टांत
2. मौसम के चिन्ह् का दृष्टांत
और 3. जाल का दृष्टांत

मत्ती 11:16-19 में बाजार में बैठे हुए बालकों का दृष्टांत,
मत्ती 16:1-4 में मौसम के चिन्ह् का दृष्टांत
और मत्ती 13:47-50 में जाल का दृष्टांत,
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की जिम्मेदारी के विषय में दृष्टांत हैं।

क. बाजार में बैठे हुए बालक

पढ़ें मत्ती 11:16-19 और लूका 7:31-32।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत अलंकारिक शब्दों में बताया गया है और इसका आत्मिक अर्थ इसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी और पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

बाजार। उन दिनों में, जिस दिन बाजारों में किसी भी व्यवसाय का लेन-देन नहीं होता है, विशेषरूप से बालक खेलने के लिए खुले स्थान में एकत्र होते हैं। यह सारे संसार भर में बहुत आम बात है।

खेल और झगड़ा। इस कहानी में बालकों के एक समूह को बिना सफल हुए खेलने की कोशिश करते हुए चित्रित किया गया है। हमेश कुछ ऐसे बालक होते हैं जो किसी भी खेल को खेलने के विषय में जो सुझाव दिए जाते हैं, उसका विरोध करते हैं! उदाहरण के लिए, जब कुछ बालक एक आनंद दयाक खेल को खेलने का सुझाव देते हैं, जैसे कि बाँसली बजाना या नाचना, तब बालकों का एक दूसरा समूह इस विचार का विरोध करता है। जब वे दूसरा सुझाव देते हैं कि हम कोई दुःखी खेल खेलते हैं, जैसे कि कोई शोक गीत गाना या रोना, फिर से दूसरा समूह इसका विरोध करता है। इसलिए बालक एक दूसरे के प्रति शिकायत करते और झगड़ा करते हैं, और सहयोग की कमी के करण एक दूसरे पर दोष लगाते हैं।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का समायोजन दृष्टांत को बताने के *अवसर* या दृष्टांत को बताने के

समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की काहनी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की काहनी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 11:1–15 या लूका 7:24–30 में निहित है।
यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवाकाई के महत्व के बारे में बात की, और इस्त्राएल के लोगों के द्वारा यूहन्ना को प्राप्त प्रतिक्रिया की कमी की ओर संकेत किया। शुरूआत में साधारण लोगों ने यूहन्ना को उत्साह के साथ स्वीकार किया (मत्ती 3:5–7)। यूहन्ना ने प्रचार किया कि लोगों को अपने बुरे मार्ग से फिरना चाहिए और अपने वास्तविक पश्चयाताप को सिद्ध करने के लिए अच्छे फल लाने चाहिए। आम तौर पर, बहुत से साधारण लोग हर जगह से आकर परमेश्वर की इस धार्मिक आवश्यकता के प्रति सहमत हुए। उन्होंने परमेश्वर की इस धार्मिक आवश्यकता के प्रति अपनी सहमती परमेश्वर की ओर फिर कर और यूहन्ना के अधीन पानी के बपतिस्में को लेकर दिखायी। लेकिन बड़ी संख्या में फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों ने अपने सभी अनुयायियों सहित, परमेश्वर के उद्धार के उद्देश को अपने विषय में अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वे यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा नहीं लेना चाहते थे (लूका 7:29–30)। यीशु ने यह दृष्टांत इसलिए कहा क्योंकि, लोग बहुत चचंल और अस्थिर थे।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 11:16–17 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण मत्ती 11:18–19 और लूका 7:33–35 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 11:16–19 और लूका 7:31–32 में बाजार में बैठे बालकों का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की जिम्मेदारी" के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "एक व्यक्ति को बचकानी हरकतें छोड़ कर अपने शब्दों और कार्यों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।"

जबकि मत्ती 18:1–5 में यीशु लोगों को "बलकों के समान" बनने की सलाह देते हैं वहीं मत्ती 11:16–19 में वह लोगों को उनके "बचकाने व्यवहार" के लिए दोषी ठहराते हैं। एक असहिष्णु

रवैया और लगातार आलोचना, बचकान और पूरी तरह से मूर्खतापूण है, जब वे परमेश्वर (यीशु) की बुद्धिमानी की शिक्षा को अस्वीकार करते हैं।
समाज के सामान्य लोगों (यहाँ तक कि बुरे लोगों) ने भी पहचाना कि परमेश्वर का मार्ग (उनके लिए क्षमा जो पश्चयाताप करते और उद्धारकर्ता में विश्वास करते हैं) सही है और यूहन्ना के द्वारा पानी का बतिस्मा लिया। लेकिन धार्मिक यहूदी अगुवों ने परमेश्वर के उद्देश और योजना (पश्चयाताप और मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार) को अपने विषय में अस्वीकार कर दिया और इसलिए यूहन्ना द्वारा पानी का बपतिस्मान नहीं लिया (लूका 7:29-30)।
व्यक्तिगत जिम्मेदारी परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों ने बचकानी हरकतों को छोड़ कर, पश्चयाताप, विश्वास और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की व्यक्तिगत जिम्मेदारी को लिया है (मरकुस 1:15)।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।
पढ़ें 1कुरिन्थियों 3:1-4; इब्रानियों 5:11 से 6:3
खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?
ध्यान दें। दोनों लेखांश अपरिपक्व व्यवहार के परिणामों के विषय में सिखाते हैं। बचकाने व्यवहार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- धार्मिक विश्वास और कलीसिया की परंपराओं के विषय में झगड़ना जो मानवीय राय पर आधारित हैं और परमेश्वर के शुद्ध वचन के अनुसार नहीं हैं।
- मसीह की देह में एकजुट रहने के बजाय विभिन्न संप्रदायों में विभाजित होना।
- इस संसार के लोगों के समान व्यवहार करना।
- स्वंय को पोषित करना सीखने के बजाय, अपने आत्मिक भोजन के लिए आत्मिक अगुवों (पासबानों) पर निर्भर रहना।
- सही को गलत से, भले को बुरे से, सत्य को असत्य से अलग करने के योग्य न होना।

बाइबल के इन दो लेखांशो में, कुरिन्थियों के मसीही और इब्रानियों के मसीहियों ने अभी भी अपने जीवनों, निर्णयों, चुनावों, आत्मिक उन्नति और व्यवहार की जिम्मेदारी नहीं ली थी!

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश (पाठ) क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना और विश्वास करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?
ध्यान दें।

(1) गैरजिम्मेदार और असंगत व्यवहार की निंदा की गई है।

यीशु ने कहा कि उनकी आलोचना करने वाले फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक, बचकाने थे। वे गम्भीरता से विचार न करने वाले और गैरजिम्मेदार और असंगत रूप से अभिनय करने वाले थे। वे कभी सकारात्म नहीं रहे और कभी संतुष्ट नहीं हुए। पहले वे यूहन्ना के विषय में उत्साहित थे और उसकी तपस्या, निम्न जीवन स्तर और पश्चयाताप के आवाह्न में कोई दोष नहीं पाया।

लेकिन फिर उन्होंने यह कहते हुए उसकी आलोचना की कि वह कठोर था, उसका संदेश बहुत तीखा था, और उसमें दुष्टात्मा थी। उन्होंने कहा कि यूहन्ना बहुत *गैरमिलनसार* था, लेकिन यीशु पर *अधिक मिलनसार* होने का दोष लगाया, क्योंकि वे उन्हें ''पेटू और पियक्कड़, और पापियों और चुंगी लेने वालों का मित्र'' मानते थे (लूका 7:33-34)। यीशु ने कहा कि इस तरह की अनुचित और कड़वी आलोचना और असहिष्णुता कहीं नहीं मिलेगी, क्योंकि अंत में परमेश्वर की सच्चाई विजयी होगी!

(2) ज्ञान अपने कर्मों से सच्चा ठहराया गया है।

मत्ती शाब्दिक रूप से कहता है, ''ज्ञान अपने कर्मों से सच्चा ठहराया गया है'' (मत्ती 11:19) और लूका शाब्दिक रूप से कहता है, ''ज्ञान अपनी सब संतानों द्वारा सच्चा ठहराया गया है'' (लूका 7:35)। इन भावों का अर्थ एक ही है। दोनों भावों का एक ही अर्थ हैः ''किसी भी कार्य का ज्ञान (''उसका कार्य'') उसके द्वारा सही सिद्ध होता है जो वह लोगों (''अपनी संतानों'') के हृदयों और जीवन में पूरा करता है, जो अपने आप को अनुमति देते हैं कि उनकी अगुवाई इस प्रकार के ज्ञान द्वारा की जाए।'' मत्ती ''ज्ञान के कामों'' और लूका ''लोग जो अपने आप को इस ज्ञान द्वारा अगुवाई पाने की अनुमति देते हैं'' पर जोर देता है।

मत्ती कहता है कि यूहन्ना बपतिस्मादाता कि बुद्धि यह थी कि उसने रूपांतरण और पश्चयाताप करने के साथ फल लाने पर जोर दिया (मत्ती 3:2,8)। और यीशु की बुद्धि यह थी कि उन्होंने उद्धार की आशा (अपेक्षा) को अयोजित किया और जिन्होंने ने भी सुसमाचार सुना उन्हें चंगा कर रहे थे (मत्ती 11:4-6)। इन कार्यों के ज्ञान का परिणाम उन कार्यों में देखा जा सकता है जो लोगों के जीवन में हुए। यीशु और यूहन्ना के कार्य (सेवकाईयाँ) पूर्ण रूप से उसके द्वारा उचित ठहराए गए जो उन्होंने ''अपनी सभी संतानो'' के हृदयों और जीवनों में पूरा किया, अर्थात उन सभी के जिन्होंने अपने आप को अनुमति दी कि वे उस ज्ञान के द्वारा अगुवाई पाएं!

क्योंकि यहूदी धार्मिक अगुवे (फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक) एक दूसरे के साथ यहूदियों की व्यवस्था (और रब्बीयों द्वार निर्मित अन्य 613) (सब्त, उपवास, खतना, सार्वजनिक प्रार्थना, खाने के नियम, दशवांश इत्यादि।) को लेकर बाल कि खाल निकालने में व्यस्त थे, वे यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु के पापों से पश्चयाताप और जीवन के रूपांतरण के प्रचार के प्रति अनुत्तरदायी बने रहे। परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने में विफल रहे (वे उद्धार पाने में विफल रहे)।
लेकिन सामन्य लोग और यहाँ तक कि चुंगी लेने वाले ने भी यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु के प्रचार का प्रत्युत्त दिया, इसलिए वे बड़ी संख्या में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर रहे थे (लूका 7:29:30)।

ख. मौसम के लक्षण

पढ़ें मत्ती 16:1-4 और लूका 12:54-56।

1. दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

कहानी काफी सामान्य है। हर जगह लोग आकाश को देखकर मौसम के बारे में अपनी राय देते हैः आज वर्षा होगी या फिर आज धूप निकलेगी। इस्त्राएल में फरीसी और सदूकी मौसम के लक्षणों की व्याख्या बहुत अच्छी तरह से करते थे। वे जानते थे कि जब शाम के समय आकाश लाल दिखाई देता है तो इसका अर्थ है कि बादल पश्चिम में समुद्र की ओर चले गए है, और अगले दिन मौसम अच्छा रहेगा। वे यह भी जानते थे कि जब भोर के समय आकाश काले बादलों के साथ लाल मिश्रित दिखाई देता था तो इसका अर्थ था कि बादल पश्चिम में समुद्र की ओर से वापस आ रहे हैं, और संभवतः उस दिन वर्षा होगी।

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 16:1 में पाया जाता है।

इस्त्राएल के धार्मिक और राजनीतिक अगुवे यीशु मसीह और उनकी सेवकाई के खिलाफ बढ़ते जा रहे थे। यीशु मसीह न केवल इस्त्राएल में पर पड़ोसी अन्यजातीय प्रदेशों जैस सूर और सैदा में भी सुसमाचार का प्रचार और लोगों को चंगा कर रहे थे (मत्ती 15:21-22)। इस्त्राएल के धार्मिक अगुवे यीशु के पास आए। उनका उद्देश्य यीशु की परिक्षा करना था, इस आशा और अपेक्षा से कि यीशु असफल हो जांए, और इस प्रकार सर्वजनिक रूप से बदनाम हो जाएं। उन्होंने संभवतः यीशु के चमत्कारों के बारे में सुना था कि उन्होंने गलील की झील के पूर्वी किनारे पर भूखे लोगों की भीड़ को भोजन प्रदान किया और विकंलागों को चंगा किया (मत्ती 15:29-39)।

स्वर्गीय चिन्ह् की माँग। जैसा कि मत्ती 12:38 में पाया जाता है, उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि यीशु के चमत्कार, ''एक चिन्ह् थे कि वे परमेश्वर की ओर से भेजे गए थे''। वे उनके असाधारण चमत्कारों को नकार नहीं पाए, लेकिन उन्होंने स्वंय को समझाने की बहुत कोशिश की कि यह किसी प्रकार का काला जादू है, कि यीशु ने यह चमत्कार शैतान की सामर्थ्य के द्वारा किए थे। उन्होंने यीशु के इन चमत्कारों को केवल ''पृथ्वी पर के चिन्ह्'' माना। वे ''स्वर्गीय चिन्ह्'' देखाना चाहते थे। स्वर्गीय चिन्हों के रूप में, वे निम्नलिखित के बारे में सोच सकते थेः

- मन्ना, जो उनकी दृष्टि में, मूसा ने स्वर्ग से बरसवाया था (यूहन्ना 6:30-32)
- सूर्य और चंद्रमा जो यहोशू की प्रार्थना पर स्थिर रहे (यहोशू 10:12-14)
- सितारें, जो बराक और दबोरा के समय में इस्त्राएल के लिए लड़े (न्यायियों 5:20)
- बादलों का जोर से गरजना जिसने शमूएल के दिनों में पलिश्तियों को घबरा दिया (1शमूएल 7:10)
- परमेश्वर की आग, जिसने एलिय्याह के दिनों में बलिदान, लकड़ी, पत्थर, पानी और मिट्टी को भी भस्म कर दिया था (1राजा 18:30-40)।

इन विरोधियों की दृष्टि में, यीशु ने अभी तक इस प्रकार का कोई ''स्वर्गीय चिन्ह्'' नहीं दिखाया था।

(2) यह कहानी मत्ती 16:2-3 में निहित है।

(3) व्याख्या या लागूकरण मत्ती 16:3-4 में दिया गया है।

समय के लक्षण। यीशु ने उनकी ओर संकेत करते हुए कहा कि वे ''समय के लक्षणों'' (यूननीः सेम्या टन किरॉन) की अपेक्षा ''मौसम के लक्षणों'' (मौसम की नियमित रूप से बदलने वाली दशा) पर अधिक ध्यान देते हैं। ''समय'' का अर्थ यहाँ साधारण समय अवधि, भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल से नहीं है, बल्कि इतिहास में एक नए युग कि शुरूआत से है जो विशेष घटनाओं से चिन्ह्ति है! इस्त्राएल के अगुवे महत्वपूर्ण को महत्वहीन समझ रहे थे। वे महत्वहीन मौसम के संकेतों के बारे में सब कुछ समझ गए लेकिन समय के महत्वपूर्ण संकेतों के बारे में कुछ भी नहीं समझ पाए। समय के संकेत विशेष संकेत हैं जो परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में मनुष्यजाति के साथ एक नए युग कि शुरूआत है! समय के संकेत हैः

- ''पुराने नियम की अवधि'' में व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की छाया ''नए नियम की अवधि की वास्तविकताओं'' में पूर्ण हुई (कुलुस्सियों 2:16-17)
- ''पुराने नियम में मसीहा के आने की भाविष्यवाणियाँ ''लंबे समय से अपेक्षित मसीहा (यीशु मसीह) के आने से पूर्ण हुई''
- ''मसीहाई युग ''तरोताजा होने के समय'' से मसीह के प्रथम आगमन के साथ शुरू होता है, और मसीह के दूसरे आगमन तक ''परमेश्वर के पुर्नस्थापन के समय तक रहेगा'' (प्रेरितों 3:19-21)
- यहूदी धार्मिक अगुवों द्वारा व्याख्या किए गए व्यवस्था के संवेदनहीन नियम ''सत्य के प्रकाशन और अनुग्रह की समर्थ्य से बदल दिए गए'' (यूहन्ना 1:17)

इस प्रकार समय के इन चिन्हों में यीशु समीह स्वयं शामिल थे जो प्रेम, अनुग्रह और सत्य के साथ खोए हुए लोगों को ढूंढते हैं और उन्हें पाते हैं। उन्होंने सभी प्रकार के चमत्कार सामर्थ्य के साथ किए। इस्त्राएल में धार्मिक अगुवे ''दीवर पर लिखावट'' को नहीं समझ पाए (दानिय्येल 5:5, 24-28)। वे नहीं जानते थे कि मनुष्यों द्वारा बनाए गए धार्मिक माध्यमों (यहूदी धार्मिक अगुवों द्वारा व्याख्या की गई औपचारिक व्यवस्था) के विषय में झगड़ने के दिन गिने हुए हैं, और सुसमाचार तब तक फैलता जाएगा जब तक कि यह सारी पृथ्वी पर न फैल जाए (यशायाह 11:9; यिर्मयाह 31:34)!

योना का चिन्ह्। एक मात्र चिन्ह् जो यीशु ने इस्त्राएल के लोगों को दिया था वह ''योना का चिन्ह्'' था। मत्ती 12:38-42 इस चिन्ह् के बारे में बताता है। ''जिस प्रकार योना तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।'' यहूदी और रोमि अधिकारी यीशु को क्रूस पर चढ़ाएंगे, लेकिन वह *तीसरे दिन* फिर से जी उठेंगे और सभी अधिकारियों और उनकें अनुयायियों को हमेशा के लिए निराश कर देंगे! <u>एकमात्र चिन्ह् जो यीशु समीह ने इस्त्राएल राष्ट्र को दिया वह उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान था!</u>

बाइबल यह नहीं बताती कि इन *तीन दिनों और तीन रातों* की गणना कैसे की गई थी। कुछ मसीही लोग इसका प्रयोग इस बात के प्रमाण के रूप में करते हैं कि यीशु पूरे तीन दिन प्रत्येक दिन 24 घंटे के लिए मृत थे, और इसलिए उन्हें शुक्रवार दोपहर की बजाय गुरूवार को सूली पर चढ़ाया गया था। लेकिन यह सिंद्धात सही नहीं है।

- पहला. बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि यीशु को गुरूवार को सूली पर नहीं चढ़ाया गया था, लेकिन शुक्रवार को दोपहर में और वह रविवार को सुबह जल्दी ही फिर से जी उठे। यूनानी भाषा में मूल शब्द, ''परस्केयू'' का अर्थ ''तैयारी'' है, अर्थात सब्त के दिन के लिए तैयारी करना (शुक्रवार को), यहूदियों के सब्त के दिन (शनिवार) से एक दिन पहले। यह शब्द अभी भी ''शुक्रवार'' के लिए आधुनिक यूनानी शब्द है (मरकुस 15:42; लूका 23:55-56; यूहन्ना 19:42)।
- दूसरा. उनके विचार में ''तीन पूरे दिन'' का अर्थ होगा कि यीशु को केवल रविवार कि दोपहर को उठाया जा सकता था। हाँलाकि यीशु को रविवार की सुबह बहुत जल्दी ही जीवित कर दिया गया।
- तीसरा. एस्तेर 4:16 और 5:1 में में ''तीन दिन, और रात'' का अर्थ पूरे तीन दिन, प्रत्येक दिन 24 घंटे का नहीं हो सकता। यह अभिव्यक्ति, ''एक दिन और एक रात'' एक समय-इकाई है जो दिन के एक भाग या रात के एक भाग की ओर संकेत करता है। यहूदियों ने दिन के एक हिस्से को एक दिन के बराबर और रात के एक हिस्से को एक रात के बराबर गिना। निष्कर्षः यहूदियों के अनुसार इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग का अर्थ था कि यीशु पहले दिन (शुक्रवार) के एक भाग में कब्र में थे, दूसरे दिन (शनिवार) पूरे दिन के लिए और तीसरे दिन (रविवार) के एक भाग में। *इस घटना के बाद,* यीशु ने लगातार भविष्यवाणी की कि वह ''तीसरे दिन'' फिर से जीलाए जाएंगे (मत्ती 16:21; 17:22; 20:18-19)!

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत में कहानी का कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

सिखाएं. कहानी केवल लागूकरण के लिए एक परिचय है, जो इस दृष्टांत में एकमात्र आवश्यक विवरण है (मत्ती 16:4)।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 16:1-4 में मौसम के चिन्हों का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की जिम्मेदारी'' के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''एक व्यक्ति को मौसम के महत्वहीन चिन्हों को छोड़ कर विशेष चिन्हों को देखना शुरू करना चाहिए जो मानवजाति के साथ परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के नए युग को चिन्हित करते हैं! ये चिन्ह् हैंः

- **यीशु मसीह का प्रथम आगमन जिसमें उन्होंने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा किया**
- **और वास्तविकताओं को सामने लाए जिनकी ओर पुराने निमय की छायाओं ने संकेत किया**
- **यीशु मसीह का प्रथम आगमन जिसमें उन्होंने उद्धार और न्याय की घोषणा की**
- **सत्य सिखाया, दया और अनुग्रह दिखाया और चमत्कार किए**

समय के इन चिन्हों के साथ उन्होंने नए नियम की अवधि का परिचय दिया! यीशु के चारों ओर कि बड़ी घटनाएँ विशेष रूप से उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान, ऐसे महान चिन्ह् हैं जिन पर लोगों को ध्यान देना चाहिए और उनका प्रत्युत्तर देना चाहिए।

व्यक्तिगत जिम्मेदारी परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों ने महत्वहीन चिन्हों (लड़ाईयों, आकाल, भूंकप, उत्पीड़न, जातियों की घृणा, विश्वास का परित्याग, बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता/धर्म, अपराध में वृद्धि और प्रेम का ठंडा पड़ना (मत्ती 24:6-12)। और सभी जातियों पर यीशु के राज्य की घोषणा) को देखना बंद कर दिया है। इसके बजाव वे संसार के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण चिन्हों को देख रहे हैं (मसीह का प्रथम आगमन जिसमें उन्होंने भविष्यवाणियों को पूरा किया और उन वास्तविकताओं को प्रगट किया जिसकी ओर छाया संकेत करती थी, यीशु मसीह और उनके राज्य के संदेश की घोषणा सभी जातियों में की गई (मत्ती 24:14) और उनकी मृत्यु और तीसरे दिन पुनरूत्थान इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने उनके प्रायश्चित बलिदान को स्वीकार किया - संक्षेप में हमारे स्थान पर उनके उद्धार के कार्य का पूर्ण होना।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

खोजें और चर्चा करें। यह लेंखाश जो सिखातें हैं उसकी तुलना इससे किस प्रकार की जा सकती है जो यह दृष्टांत सिखाता है?

(1) पूर्वजों के परमेश्वर को देखें।

मत्ती 22:23-33 पढ़ें। सदूकी मुर्दों के पुनरूत्थान पर विश्वास नहीं करते थे। इसलिए उन्होंने भी यीशु की इस भविष्यवाणी को अस्वीकार किया कि वह तीसरे दिन मुर्दों में से जीवित हो जाएंगे। हालाँकि मत्ती 22 में यीशु एक और तरीके से साबित करते हैं कि पुनरूत्थान निश्चित रूप से होगा। जबकि अब्राहम और उसके बाद की पीढ़ियाँ बहुत वर्षों पहले ही मर चुकि थी (शारीरिक रूप से), फिर भी परमेश्वर अपने आप को "अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर" कहते हैं। अब क्योंकि परमेश्वर "मुर्दों के नहीं *जीवतों* के परमेश्वर हैं", इसलिए इससे केवल यह सिद्ध नहीं होता कि अब्राहम, इसहाक और याकूब कि *आत्माएँ (या प्राण)* परमेश्वर की उपस्थिति में जीवित हैं, बल्कि भाविष्य में परमेश्वर उनके *शरीरों* को भी जीवित करेंगे!

(2) पवित्रशास्त्र में मसीहा को देखें।

यूहन्ना 5:39-47 पढ़ें। यहूदियों ने परिश्रम से पुराने नियम का अध्ययन किया, क्योंकि वे सोचते थे कि इसके द्वारा वे अनंत जीवन के अधिकारी होंगे। हालाँकि, केवल पवित्रशास्त्र का अध्ययन करना नहीं, पर जो कुछ पवित्रशास्त्र कहता है उसका पालन करना, अंनत जीवन की ओर ले जाता है। पवित्रशास्त्र यीशु मसीह के विषय में और अनंत जीवन प्राप्त करने के लिए उनके पास आने के बारे में बताता है। अंतिम न्याय के दिन मूसा और अन्य भविष्यद्वक्ता यहूदियों पर पवित्रशास्त्र पर विश्वास न करने और आज्ञा पालन न करने का दोष लगाएंगे!

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान मानव इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना है! मानव इतिहास की यह एक महान घटना, मानव इतिहास को दो भागों में बाँटती हैः यह पुराने नियम

अवधि की भविष्यवाणियों और छायाओं का अंत करती है और नए नियम की पूर्णता और वास्तविकताओं की शुरूआत करती है। यह महान घटना एकमात्र चिन्ह् था जो यीशु मसीह ने फरीसियों को दिया जिन्होंने यीशु की मृत्यु की साजिश रची थी और विश्वास नहीं किया था कि वह फिर से जीवित होंगे। यह महान घटना एकमात्र चिन्ह् था जो यीशु मसीह ने सदूकियों को दिया था जो शरीर के पुनरूत्थान पर विश्वास नहीं करते थे।

ग. बड़ा जाल

पढ़ें मत्ती 13:47-50

1. दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें। जहाँ कहीं भी लोग मछली पालन करते हैं, वहाँ यह कहानी काफी आम है। एक जाल एक ही समय पर अच्छी और बुरी दोनों मछलियों को पकड़ता है। लेकिन बाद में जब जाल को किनारे पर लाया गया तो अच्छी और बुरी मछलियाँ अलग कर दिया गया।

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 13:36-51 में पाया जाता है।

यह उसी प्रकार का समायोजन है जो कि गेहूं के बीच घास के दृष्टांत, छिपे हुए खाजाने और बहुमूल्य मोती का है, ये सभी दृष्टांत चेलों से कहे गए थे, भीड़ से नहीं।

(2) दृष्टांत की कहानी मत्ती 13:49-40 में निहित है।

(3) दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण मत्ती 13:49-50 में दिया गया है।

यह दृष्टांत अपने वर्तमान प्रगटीकरण में परमेश्वर के राज्य के मिश्रित चरित्र की बात करता है। वास्तविक मसीही और झूठे मसीहियों को अंतिम न्याय के दिन तक साथ में रहना और काम करना है। अपने दूसरे अगमन में मसीह अपने स्वर्गदूतों को भेजेंगे जो विश्वासियों को अविश्वासियों से, धर्मियों को अधर्मियों से और झूठे मसीहियों को वास्तविक मसीहियों से अलग करेंगे। अविश्वासियों और दुष्टों में नरक में डाल दिया जाएगा, जहाँ वे दंड पाएंगे।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।
यीशु कहानी के किसी भी विवरण का कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। मछली पकड़ रहे ''जाल'' की व्याख्या नहीं की गई है, लेकिन यह लोगों को पकड़ते हुए चेलों की एक तस्वीर है (लूका 5:10)। बुरी मछली को अच्छी मछली से ''अलग करना'' अंतिम न्याय की तस्वीर है, जैसा कि स्वयं यीशु ने मत्ती 13:50 में बताया है।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:47-50 में बड़े जाल का दृष्टांत न केवल "परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोगों" के बारे में सिखाता है, बल्कि "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी के बारे में भी सिखाता हैं।"

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "हर व्यक्ति को पता होना चाहिए कि अंतिम न्याय पूरी तरह से अटल और निर्णायक होगा। वहाँ अच्छे और बुरे लोगों को अलग कर दिया जाएगा।"

मुख्य संदेश, मत्ती 13:41-43 में गेहूं के बीच घास के दृष्टांत के मुख्य संदेश से संबंधित है। वहाँ वास्तविक मसीहियों और नामधारी मसीहियों के मिश्रण के विषय में, परमेश्वर के राज्य के वर्तमान प्रगटिकरण से लेकर अंतिम न्याय के दिन तक धीरजवंत रहने के अभ्यास पर जोर दिया गया है। यहाँ अंतिम न्याय की निश्चितता पर जोर दिया गया है जिसमें नामधारी मसीहियों को निश्चित रूप से वास्तविक मसीहियों से अलग कर दिया जाएगा!

यीशु अपने चेलों को सिखाते हैं कि लोगों को आने वाले अंतिम न्याय के बारे में चेतावनी दें। वे कहते हैं कि आने वाले निर्णायक और अपरिवर्तनीय न्याय को देखते हुए, उन्हें लोगों को प्रभावित करना चाहिए कि परमेश्वर का राज्य और खजाना कितना कीमती है और यहाँ और अभी उस पर अधिकार करना कितना महत्वूर्ण है!

व्यक्तिगत जिम्मेदारी परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। अंतिम न्याय की निश्चितता और निर्णायकता को देखते हुए गंभीर लोग आगे की सभी देरी को रोकते हैं और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का व्यक्तिगत और जिम्मेदार निर्णय लेते हैं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

सिखाएँ। विशेषरूप से बड़े जाल के दृष्टांत की व्याख्या और लागूकरण गेहूं के बीच घास के दृष्टांत से मिलता जुलता है। परमेश्वर के राज्य के वर्तमान प्रगटिकरण में अच्छे और बुरे लोग परस्पर मिश्रित हैं। वे केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर अलग किए जाएंगे।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश (पाठ) क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

अंतिम न्याय अपरिवर्तनीय और अटल होगा! यीशु मसीह ने एक बार परमेश्वर के अंतिम न्याय में दंड की घोषणा करने के बाद नियमित रूप से इसकी निश्चितता पर जोर दिया (मत्ती 8:12; 13:4; 13:50; 25:10; 25:30; 25:46; लूका 17:26-37)। इसलिए वह हर जगह लोगों से पश्चयाताप करने का अग्रह करते हैं (मत्ती 4:17; 9:13) और वह उन्हें उपदेश देते हैं कि लगातार सतर्क रहें (मत्ती 25:13)। साथ ही यह सभी प्रकार के लोगों के प्रति यीशु मसीह के दिल में गहन सहानुभूति के साथ मेल खाता है (मत्ती 9:35-38; 11:28-30; 14:13-18; 15:32; 23:37)